Arvind Kumar
Primary School Urdu Medium, Baruasagar, Futera, Badagaon, Jhansi, Uttar Pradesh
Email id: patelakverma@gmail.com

Abstract

The school is located in the interior of Bundelkhand region with only two rooms. The main concern of the school head lay in the irregularity among students in the school combined with less awareness among parents about children's education. For this purpose, the school team made collective efforts with School Management Committee (SMC) and Parents Teachers Association (PTA). The head took leading position to visit students at their home to convince parents to send their children regularly. The innovations in the school concerned active strategies for teaching learning process.

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

बेसिक षिक्षा परिशद, उत्तर प्रदेष द्वारा संचालित यह विद्यालय, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रानी लक्ष्मीबाई के झाँसी जिले के झाँसी–खजुराहो राजमार्ग पर मुख्यालय से लगभग 20 झड की दूरी पर बरूआसागर कस्बे में स्थित है। मुख्यमार्ग से इसकी दूरी लगभग 600 मीटर है।

बरूआसागर ग्रामीण परिवेष का एक छोटा कस्बा है, जिसकी मुख्य भाशा बुन्देलखण्डी है।

विषिश्ट पहचान : बरूआसागर का किला (रानी झाँसी के वफादार सागर सिंह का किला) एवं स्वर्गाश्रम झरना बरूआसागर की विषिश्ट पहचान है, जिसे देखने बरसात के मौसम में बहुत दूर–दूर से लोग आते हैं। यह आर्थिक रूप से पिछड़ा कस्बा है, जहां रोजगार के साधनों का अभाव है एवं परिवारों के बढ़ने से लोगों के पास बहुत कम–कम कृशि भूमि है, जिससे गरीबी और अषिक्षा की समस्यायें हैं और ज्यादा लोग अपने कस्बे से बाहर जाकर मजदूरी करते हैं अथवा बेरोजगार हैं और ज्यादातर लोग षराब, जुए जैसे व्यसनों से ग्रसित हैं।

विद्यालय भवन के अन्तर्गत दो कमरे, एक बरामदा तथा प्रधानाध्यापक कक्ष है। भवन सन् 1990 का बना हुआ है एवं छत जर्जर है। खण्डषिक्षा अधिकारी महोदया बड़ा गाँव (झाँसी) के दिनांक 13.08.2016 के आदेष से प्राथमिक विद्यालय उर्दू मीडियम, बरूआसागर के साथ, प्राथमिक विद्यालय नवीन कन्या, बरूआसागर भी अस्थायी रूप से संचालित हैं।

चुनौतियाँ के समाधान की योजना

1 बच्चों के प्रतिदिन विद्यालय समय से न आने की समस्या :–

ज्यादातर समुदाय के अभिभावक अषिक्षित होने के कारण अपने बच्चों को घरेलू कार्यों में व्यस्त कर लेते हैं और उन्हें समय पर विद्यालय नहीं भेजते हैं। इस समस्या के समाधान हेतु मैंने समय–समय पर विद्यालय प्रबन्ध समिति, अभिभावक संघ आदि समितियों की संयुक्त बैठकें आयोजित कर अभिभावकों को षिक्षा के महत्व के प्रति एवं अषिक्षित रहने से भविश्य में होनी वाली सम्भावित परेषानियों से अवगत कराया है इसके साथ ही, उनको अपने बच्चों को प्रतिदिन समय से विद्यालय भेजने एवं घर पर भी बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया गया है। इसमें मेरी स्वयं की भूमिका प्रुमख रूप से रही और ैडब एवं च्ज्। आदि के कुछ सदस्यों का भी बहुत सहयोग मिला और कुछ सहयोग प्राथमिक विद्यालय नवीन कन्या, बरूआसागर के स्टाफ में श्रीमती निधि निरंजन प्रधानाध्यापिका का भी रहा है, जिससे विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति का प्रतिषत बढ़ गया एवं विद्यालय की गतिविधियों से समाज में भी एक अच्छा विद्यालय होने का संदेष गया।

;ठद्ध **अभिभावकों का अपने बच्चों की षिक्षा के प्रति जागरूक न होनाः–**

अभिभावकों के अषिक्षित होने व षिक्षा के प्रति जागरूक न होने के कारण, वे अपने बच्चों की ओर ध्यान नहीं दे पाते कि उनके बच्चों की क्या आवष्यकता है और उनकी क्या परेषानियां हैं। बच्चों की आवष्यताएँ न समझ पाने तथा पूर्ण न होने के कारण, बच्चों का मन अध्ययन से दूरी बनाने लगता है।

विद्यालय में अध्यापकों द्वारा बच्चों को गृहकार्य देने पर तथा अभिभावकों द्वारा अपने बच्चे को षिक्षा के प्रति जागरूक न करने और ध्यान न देने से बच्चों में अधिगम की सुचारू रूप से अनिरन्तरता की समस्या उत्पन्न हो जाती है और कुछ बच्चे, उन बच्चों की तुलना में जो कि गृहकार्य करते हैं, अपने आप को कमजोर समझने लगते हैं और पढ़ाई से जी चुराने लगते हैं।

मैंने इस समस्या के निवारण के लिये बच्चों के घर–घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क किया और उन्हें बच्चों के गृहकार्य पूर्ण करवाकर विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया। इसमें मुझे कुछ अभिभावक (जो कि विभिन्न समितियों के सदस्य हैं) का भी सहयोग मिला।

इस प्रकार दोनों समस्याओं में अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के अभिभावक षामिल थे और उनकी इन समस्याओं के निवारण के लिए मैंने और प्राथमिक विद्यालय नवीन कन्या, बरूआसागर की प्रधानाध्यापिका तथा विभिन्न

समितियों के सदस्यों (अभिभावकों) के द्वारा बहुत प्रयास करने के बाद अन्य अभिभावकों को षिक्षा के प्रति संवेदनषील बनाने की पूर्ण कोषिष की गई।

प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार के परिणाम -

अभिभावकों को षिक्षा के प्रति जागरूक करने तथा षिक्षा की महत्वता को बताने से बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति का प्रतिषत बढ़ा है और ज्यादातर बच्चे गृहकार्य करके लाने लगे।

मैंने स्टाफ को ज्स्ड के सक्रिय प्रयोग से गतिविधि आधारित षिक्षण के प्रति प्रेरित किया एवं स्वयं भी षून्यनवाचार के अंतर्गत (जैसे– ;पद्ध हवा में भार होता है, दिखाने के लिए झाड़ू की तीली लेकर उसमें दोनों तरफ खाली गुब्बारे बांधकर और बीच में धागा बांधकर दिखाते हैं कि दोनों ओर खाली गुब्बारों का वजन एक सा है। इसके बाद एक तरफ के गुब्बारे में मुँह से हवा भरकर, फिर से तीली में, लटकाते हैं, तो हवा भरे गुब्बारे की तरफ, तीली झुकाव ले लेती है, इससे बच्चे आसानी से समझ जाते हैं कि इस दिखायी न देने वाली रंगहीन, गंधहीन महसूस होने वाली वायु (हवा) में भी भार (वजन) होता है।

;पपद्ध पौधे के विभिन्न भागों का अध्ययन कराने के लिए एक पौधा आस–पास के कृशि परिवेष से जिसमें जड़, तना, पत्ती, फूल एवं फल सभी भाग स्पश्ट दिखाई दे रहे हों, को समझाने के लिए ले लेते हैं, और बच्चों को पास–बुलाकर विस्तार से पौधे के विभिन्न भागों और उनके कार्यों को समझाते जाते हैं। इस तरह

बच्चे पौधे के विभिन्न भागों एवं कार्यों को अच्छी तरह से समझ जाते हैं।) एवं ज्स्ड (बच्चों को ध्रुवों और रेखाओं का ज्ञान कराने के लिए ग्लोब लेकर अपने चारों तरफ खड़ा कर लेते हैं, और बताते हैं कि हमारी पृथ्वी भी इसी तरह है और उनको बताते हैं कि पृथ्वी के बीचों बीच में जो रेखा खिंची हुयी दिखायी दे रही है, वह भूमध्य रेखा है और यदि हम भूमध्य रेखा से ऊपर की ओर यानि उत्तर दिषा में चलना प्रारम्भ करें तो हम पृथ्वी के उत्तरी छोर पर पहुँच जायेंगे, जिसे उत्तरी ध्रुव कहते हैं और यदि हम भूमध्य रेखा से नीचे की ओर यानि दक्षिण दिषा में चलना प्रारम्भ करें तो हम पृथ्वी के दक्षिणी छोर पर पहुँच जायेंगे जिसे दक्षिण ध्रुव कहते हैं। इसी प्रकार यदि हम पृथ्वी को भूमध्य रेखा से बीचों–बीच काट दें, तो पृथ्वी दो बराबर भागों में बंट जायेगी। ऊपर का हिस्सा उत्तरी गोलार्द्ध तथा नीचे का हिस्सा दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है। बच्चे आसानी से और अच्छी तरह विशय वस्तु को समझ जाते हैं।) के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा षिक्षण कार्य षुरू किया। इसके परिणामस्वरूप बच्चों को विशय–वस्तु समझने में सरलता (आसानी) होने लगी, बच्चे अध्ययन के प्रति रूचि लेने लगे, विद्यालय में विभिन्न जयंतियां मनाने, पी0टी0 कराने, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी कविताओं और गिनती–पहाड़ों के सास्वर सामूहिक वाचन एवं पुरस्कार वितरण आदि क्रियाकलापों से बच्चों के अन्दर आत्मविष्वास बढ़ा और वे प्रसन्नता पूर्वक विद्यालय के क्रियाकलापों में प्रतिभाग करने लगे।

भविष्यकालीन योजनाएँ

सभी बच्चे प्रतिदिन स्नान करके एवं साफ–सुथरी वेष–भूशा पहनकर विद्यालय समय पर आयें जिससे हमारे विद्यालय के बच्चे बार–बार बीमार न पड़ें एवं इसके लिए विद्यालय में समय–समय पर अभिभावकों की बैठकें आयोजित करके उनको स्वच्छता से होने वाले लाभ एवं गंदगी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों एवं हानियों के विशय में विस्तार से जानकारियां देने तथा स्वच्छता से रहने के लिए परिवेषी स्वच्छता के लिए बार–बार प्रेरित करने की योजना है, क्योकि समुदाय में अषिक्षित अभिभावकों का प्रतिषत अधिक है और बच्चे प्रत्येक मौसम परिवर्तन के समय बार–बार बीमार होते रहते हैं। जिससे वह कमजोर रहते हैं और माता–पिता का काफी धन अनावष्यक रूप से उनकी चिकित्सा में व्यय हो जाता है और वे गरीबी में रहने के लिए मजबूर रहते हैं।

स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिका

विद्यालय प्रमुख के रूप में मुझे अपने विद्यालय एवं बच्चों की समस्याओं को समझकर एवं उनका निवारण करके आत्मसंतुश्टि की प्राप्ति हुयी और अब मुझे महसूस होता है कि अपने विद्यालय के स्टाफ का बराबरी से सहयोग मिलने पर मैं अपने विद्यालय के बच्चों एवं समुदाय को और अधिक षिक्षित व जागरूक बना सकता हूँ। और वे आगे चलकर अपने आपको देष के बहुत अच्छे नागरिक के रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे। मैं समय–समय पर विद्यालय के बाद बच्चों के घर जाकर उनके अभिभावकों को षिक्षा के प्रति प्रेरित करता रहता हूँ। मेरे द्वारा समुदाय के तथा विद्यालय के बच्चों के लिये जो भी छोटे–बड़े प्रयास किये गये उन सब प्रयासों में मैं कुछ हद तक सफल हुआ और मुझे आगे भी विद्यालयीषिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुयी।

गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और अन्य पर्वों एवं महापुरूशों की जयन्तियों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले बच्चों को स्वयं के खर्चे से पुरस्कृत किया जाने लगा, तो अन्य बच्चों में भी सीखने और प्रतिभाग करने की भावना उत्पन्न हुयी जो कि उनके बहुमुखी विकास के लिए अतिआवष्यक है।

अतः मैं अपने अनुभवों के आधार पर कह सकता हूँ कि मेरे साथ–साथ मेरे विद्यार्थियों के स्व में भी बहुत परिवर्तन आया है।